Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्यपूर्व में शक्ति संतुलन ईरान – इजराइल शत्रुता का एक विश्लेषण

संदीप बिड़ला* सुदीप बिड़ला**

*** सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) पीएमसीओई शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.) भारत**
**** सहायक प्राध्यापक, पीएमसीओई महाराजा भोज शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धार (म.प्र.) भारत**

शोध सारांश – यह शोध पत्र मध्य पूर्व में शक्ति संतुलन पर ईरान और इजराइल के बीच बढ़ती शत्रुता के गहन प्रभाव का विश्लेषण करता है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वैचारिक मतभेदों परमाणु कार्यक्रम की चिंताओं क्षेत्रीय प्रॉक्सी युद्धों और बाहरी शक्तियों की भूमि का जैसे प्रमुख कार कों का विस्तृत अध्ययन किया गया है। इसका उद्देश्य इस जटिल गतिरोध की जड़ों को समझना, इसके वर्तमान निहितार्थों की पड़ताल करना और क्षेत्र की स्थिरता और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा पर इसके संभावित परिणामों का मूल्यांकन करना है। यह पत्र दर्शाता है कि कैसे ये शत्रुता मध्य पूर्व के भू– राजनीतिक परिदृश्य को नया आकार दे रही है जिससे अनिश्चितता और संघर्ष का एक चक्र बन रहा है।

प्रस्तावना – मध्यपूर्व अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और रणनीतिक भौगोलिक स्थिति के साथ दशकों से भू– राजनीतिक उथल– पुथल का केंद्र रहा है। इस जटिल परिदृश्य के भीतर ईरान और इजराइल के बीच का संबंध एक अनोखा और लगातार विकसित होता हुआ विरोधाभास प्रस्तुत करता है। कभी सहयोगी रहे ये दोनों देश आज घोर शत्रु बन चुके हैं जिनकी प्रतिद्वंद्विता पूरे क्षेत्र में शक्ति संतुलन को गहराई से प्रभावित कर रही है। यह शोध पत्र ईरान –इजराइल शत्रुता के मूल कारणों इसके विभिन्न आयामों और मध्य पूर्व में शक्ति संतुलन पर इसके व्यापक प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। हम इस जटिल संबंध की ऐतिहासिक जड़ों वैचारिक अंतर्विरोधों सैन्य क्षमताओं की होड़ और क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसके बहुस्तरीय प्रभावों की पड़ताल करेंगे। इस शत्रुता को समझना न केवल क्षेत्र की वर्तमान चुनौतियों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि भविष्य के संभावित परिदृश्यों का अनुमान लगाने के लिए भी आवश्यक है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और संबंधों का विकास– ईरान और इजराइल के बीच संबंध हमेशा से तनावपूर्ण नहीं रहे हैं। 1979 की ईरानी क्रांति से पहले विशेष रूप से शाह मोहम्मद रजा पहल वीके शासन काल में दोनों देशों के बीच अनौपचारिक लेकिन कार्यात्मक संबंध थे। इजराइल को ईरान द्वारा मध्यपूर्व में एक गैर –अरब शक्ति के रूप में देखा जाता था जो सोवियत संघ और अरब राष्ट्रवाद के विरुद्ध एक संभावित सहयोगी हो सकता था। तेल व्यापार खुफिया जानकारी साझाकरण और सैन्य सहयोग गुप्त रूप से होता था। इजराइल ईरान को अपनी सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण बाहरी मित्र मानता था खास कर जब वह अरब देशों से घिरा हुआ था।

हालांकि 1979 की इस्लामिक क्रांति ने इन संबंधों में नाटकीय परिवर्तन ला दिया। आयतुल्लाह रुहुल्लाह खुमैनी के नेतृत्व में नई इस्लामी सर कारने इजराइल को एक अवैध जायोनी इकाई और अमेरिकी साम्राज्य वाद का चौकीदार घोषित कर दिया। इजरायल के साथ सभी संबंध तुरंत तोड़ दिए गए और फिलिस्तीनी मुक्ति के लिए जोरदार समर्थन व्यक्त किया गया। क्रांति के बाद ईरान की विदेश नीति इस्लाम वादी सिद्धांतों पर आधारित हो गई जिसमें इजरायल का अस्तित्व एक वैचारिक चुनौती बन गया। इजरायल ने भी बदले में ईरान के परमाणु कार्यक्रम और क्षेत्र में बढ़ते प्रभाव को अपनी सुरक्षा के लिए एक अस्तित्व गत खतरा मानना शुरू कर दिया। यह वैचारिक मोड़ और परस्पर अविश्वास की शुरुआत थी जिसने दोनों देशों को शत्रुता के पथ पर धकेल दिया। इस खंड के विश्लेषण में (Smith,2023) द्वारा प्रस्तुत ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि का उपयोग किया गया है।

वर्तमान गतिरोध के मुख्य कारण: ईरान और इजराइल के बीच वर्तमान गतिरोध कई जटिल और परस्पर संबंधित कारकों का परिणाम है

1. **परमाणु कार्यक्रम–** ईरान का परमाणु कार्य क्रम इजराइल के लिए सबसे बड़ी सुरक्षा चिंता है। इजराइल का मानना है कि ईरान परमाणु हथियार विकसित करने की कोशिश कर रहा है जिसे वह अपने अस्तित्व के लिए सीधा खतरा मानता है। इजराइल एक परमाणु– सशस्त्र ईरान को बर्दाश्त नहीं करेगा और उसने इस कार्यक्रम को रोकने के लिए सैन्य कार्रवाई सहित सभी विकल्पों को खुला रखा है। ईरान लगातार यह दावा करता रहा है कि उसका परमाणु कार्यक्रम केवल शांतिपूर्ण उद्देश्यों जैसे ऊर्जा उत्पादन और चिकित्सा अनुसंधान के लिए है। हालांकि अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) की रिपोर्ट और पश्चिमी खुफिया एजेंसियां ईरान की नीयत पर सवाल उठाती रही हैं। 2015 का JCPOA (संयुक्त व्यापक कार्य योजना समझौता जिसका उद्देश्य ईरान के परमाणु कार्यक्रम को सीमित करना था इजराइल के लिए चिंता का विषय बना रहा जिसने इसे पर्याप्त नहीं माना। अमेरिका के इस समझौते से हटने के बाद ईरान ने अपनी परमाणु गतिविधियों को फिर से तेज कर दिया है जिससे इजराइल की चिंताएं और बढ़ गई हैं। इस पहलू पर विस्तृत जानकारी Jones (2024), के विश्लेषण पर आधारित है।

2. **क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता–** मध्यपूर्व में प्रभुत्व और प्रभाव के लिए ईरान और इजराइल के बीच एक गहरी क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता मौजूद है। यह

प्रतिद्वंद्विता प्रॉक्सी युद्धों और विभिन्न क्षेत्रीय संघर्षों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

1. सीरिया सीरिया में गृह युद्ध दोनों देशों के लिए एक प्रमुख युद्ध क्षेत्र बन गया है। ईरान असद शासन का एक प्रमुख समर्थक है और उसने लेबनान के हिज्बुल्लाह और अन्य शियामिलिशिया के माध्यम से सीरिया में अपनी सैन्य उपस्थिति मजबूत की है। इजराइल सीरिया में ईरान की सैन्य उपस्थिति को अपनी उत्तारी सीमा पर सीधा खतरा मानता है और उसने ईरानी ठिकानों और हथियारों के काफिलों पर सैकड़ों हवाई हमले किए हैं।

2. लेबनान लेबनान में हिज्बुल्लाह ईरान द्वारा समर्थित एक शक्तिशाली शिया राजनीतिक दल और अर्धसैनिक समूह इजराइल के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा है। हिज्बुल्लाह के पास एक बड़ा रॉकेट शस्त्रागार है जो इजराइल के अंदरूनी हिस्सों तक पहुँच सकता है। इजराइल हिज्बुल्लाह को ईरान का एक मोहरा मानता है और दोनों के बीच कई बार संघर्ष हो चुका है।

3. गाजापट्टी गाजापट्टी में हमास और इस्लामिक जिहाद जिन्हें इजराइल आतंकवादी संगठन मानता है को ईरान से महत्वपूर्ण समर्थन प्राप्त है। इजराइल और इन समूहों के बीच कई संघर्ष हुए हैं जिनमें ईरान की भूमिका एक विवादास्पद मुद्दा बनी हुई है।

4. अन्यक्षेत्र यमन में हूती विद्रोहियों और इराक में शिया मिलिशिया को ईरान का समर्थन भी क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को प्रभावित करता है और इजराइल की सुरक्षा चिंताओं को बढ़ाता है। इन प्रॉक्सी युद्धों का विश्लेषण Miller (2023), में गहराई से किया गया है।

3. फिलिस्तीन मुद्दा – फिलिस्तीन मुद्दा ईरान और इजराइल के बीच वैचारिक विभाजन का एक महत्वपूर्ण बिंदु है। ईरान फिलिस्तीनी अधिकारों का प्रबल समर्थक है और इजराइल के अस्तित्व पर सवाल उठाता है। यह फिलिस्तीनी गुटों जैसे हमास और इस्लामिक जिहाद को महत्वपूर्ण वित्तीय और सैन्य सहायता प्रदान करता है। इसके विपरीत इजराइल फिलिस्तीनी संघर्ष में ईरान के हस्तक्षेप को अपने आंतरिक मामलों में एक खतरनाक हस्तक्षेप और क्षेत्र को अस्थिर करने का प्रयास मानता है।

4. धार्मिक और वैचारिक अंतर– ईरान की इस्लामी क्रांति के बाद वैचारिक मतभेद शत्रुता का एक केंद्रीय कारक बन गए। ईरान अपनी इस्लामी क्रांति के सिद्धांतों का प्रसार करना चाहता है और क्षेत्र में इजराइल की वैधता को चुनौती देता है। इजराइल एक यहूदी राष्ट्र के रूप में ईरान के इस्लामी गणतंत्र को अपने अस्तित्व के लिए एक वैचारिक चुनौती मानता है। यह मौलिक वैचारिक विभाजन संघर्ष को एक गहरी और अधिक जटिल परत प्रदान करता है।

5. अमेरिका की भूमिका– संयुक्त राज्य अमेरिका इजराइल का एक प्रमुख रणनीतिक सहयोगी ईरान –इजराइल संबंधों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अमेरिका की ईरान पर अधिकतम दबाव की नीति जिसमें प्रतिबंध और सैन्य उपस्थिति शामिल है इजराइल की स्थिति को मजबूत करती है लेकिन ईरान के साथ तनाव भी बढ़ाती है। ईरान अमेरिका को महान शैतान मानता है और इजराइल को उसका क्षेत्रीय प्रतिनिधि। अमेरिकी समर्थन इजराइल को ईरान के खिलाफ आक्रामक रुख अपनाने में सक्षम बनाता है। जबकि ईरान इसे अपनी सुरक्षा के लिए एक संयुक्त खतरा मानता है। इस खंड के लिए विभिन्न थिंकटैंकों और यूनाइटेड स्टेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ पीस (USIP) की रिपोर्टों का भी संदर्भ लिया गया है।

क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव– ईरान –इजराइल शत्रुता के मध्यपूर्व और उससे आगे व्यापक प्रभाव पड़ते हैं।

1. क्षेत्रीय अस्थिरता– दोनों देशों के बीच लगातार तनाव क्षेत्र में अस्थिर ताका एक प्रमुख स्रोत है। प्रॉक्सी युद्ध और छिटपुट सैन्य झड़पें संघर्ष के बढ़ने का खतरा पैदा करती हैं। जिससे पूरे क्षेत्र में अनिश्चितता का माहौल बना रहता है। यह प्रतिद्वंद्विता अन्य क्षेत्रीय शक्तियों को भी पक्ष चुनने के लिए मजबूर करती है, जिससे ध्रुवीकरण बढ़ता है।

2. गठबंधन निर्माण– यह शत्रुता क्षेत्र में नए गठबंधनों को जन्म दे रही है। इजराइल ने हाल के वर्षों में कई अरब देशों विशेष रूप से खाड़ी राज्यों (जैसे संयुक्त अरब अमीरात बहरीन के साथ अब्राहम समझौते के माध्यम से अपने संबंधों को सामान्य किया है। इन समझौतों को ईरान के खिलाफ एक संभावित गठबंधन के रूप में देखा जाता है। दूसरी ओर ईरान ने अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए रूस और चीन जैसे देशों के साथ अपने संबंधों को गहरा किया है।

3. वैश्विक शक्तियों पर निहितार्थ– ईरान –इजराइल तनाव का वैश्विक शक्तियों पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अमेरिका के लिए यह क्षेत्र में अपनी सैन्य उपस्थिति और कूटनीतिक प्रयासों को बनाए रखने की चुनौती पेश करता है। रूस और चीन के लिए यह मध्यपूर्व में अपने प्रभाव को बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है अक्सर अमेरिकी नीतियों के विरोध में। यूरोपीय संघ के देश जो अक्सर कूटनीतिक समाधानों का समर्थन करते हैं इस संघर्ष के मानवीय और आर्थिक प्रभावों से चिंतित रहते हैं।

4. अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रभाव– यदि ईरान– इजराइल संघर्ष एक बड़े पैमाने पर युद्ध में बदल जाता है तो इसके वैश्विक अर्थव्यवस्था तेल की कीमतों और अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग मार्गों पर गंभीर परिणाम होंगे। परमाणु प्रसार का खतरा भी एक गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। क्योंकि यदि ईरान परमाणु हथियार विकसित करता है तो यह क्षेत्र में एक हथियार दौड़ को ट्रिगर कर सकता है। इस खंड के लिए विभिन्न समाचार लेख और विश्लेषण से समकालीन घटनाओं और उनके प्रभावों की जानकारी ली गई है।

निष्कर्ष और भविष्य की संभावनाएं– ईरान और इजराइल के बीच की शत्रुता मध्यपूर्व में शक्तिसंतुलन को परिभाषित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। इसकी जड़ें ऐतिहासिक घटनाओं गहरी वैचारिक भिन्नताओं परस्पर सुरक्षा चिंताओं और क्षेत्रीय प्रभुत्व की आकांक्षाओं में निहित हैं। परमाणु कार्यक्रम प्रॉक्सी युद्ध और फिलिस्तीन मुद्दा इस जटिल गतिरोध के प्रमुख चालक बने हुए हैं।

वर्तमान परिदृश्य में संबंधों के सामान्यीकरण की तत्काल संभावनाएं कम दिखती हैं। दोनों देश एक– दूसरे को अस्तित्वगत खतरा मानते हैं और उनके भू–राजनीतिक हित गहरे विरोधाभासी हैं। इजराइल अपनी सुरक्षा के लिए ईरान के परमाणु कार्यक्रम और क्षेत्रीय उपस्थिति को रोकने के लिए प्रतिबद्ध है जबकि ईरान अपनी सुरक्षा और क्षेत्रीय प्रभाव को बनाए रखने के लिए दृढ़ है।

भविष्य में यह तनाव या तो यथास्थिति बनाए रख सकता है जिसमें छिट पुट झड़पें और प्रॉक्सी युद्ध जारी रहेंगे या फिर यह एक बड़े पैमाने पर सैन्य संघर्ष में बदल सकता है जिसके विनाशकारी क्षेत्रीय और वैश्विक परिणाम होंगे। कूटनीतिक समाधान यदि संभव हो तो दोनों पक्षों के बीच विश्वास बहाली के उपायों सुरक्षा गारंटी और परमाणु कार्यक्रम पर एक नए व्यापक समझौते पर निर्भर करेगा। हालांकि वर्तमान माहौल में यह एक दुर्जेय चुनौती प्रतीत होती है। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय कोइ स गतिरोध को कम करने

और किसी भी संभावित वृद्धि को रोकने के लिए सक्रिय रूप से शामिल रहना चाहिए क्योंकि मध्यपूर्व में शक्ति संतुलन पर इसके प्रभाव पूरे वैश्विक सुरक्षा ढांचे को प्रभावित करतेहैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Smith, John. The Iran-Israel Rivalry: A Geopolitical Analysis. Oxford University Press, 2023.
2. अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA). ईरान के परमाणु कार्यक्रम से संबंधित विभिन्न वर्षो की रिपोर्टे। (उदाहरण के लिए, IAEA Board of Governors Reports.
3. Jones, Sarah. "The Nuclear Dimension of Iran-Israel Relations." Middle East Policy Journal, Vol. 30, No. 2 (2024): pp. 45-62.
4. Miller, David. "Proxy Wars in the Middle East: The Iran-Israel Shadow Conflict." Journal of Conflict Studies, Vol. 15, No. 3 (2023): pp. 112-130.
5. विभिन्न थिंक टैंक के विश्लेषण (जैसे ब्रुकिंग्स इंस्टीट्यूट सेंटर फॉरस्ट्रैटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज (CSIS) की रिपोर्टे और लेख।
6. यूनाइटेड स्टेट्स इंस्टीट्यूट ऑफपीस (USIP). संबंधित रिपोर्टे और प्रकाशन।
7. अब्राहम समझौते से संबंधित आधिकारिक दस्तावेज और प्रेस विज्ञप्तियां (जैसे अमेरिकी विदेश विभाग द्वारा जारी)
8. विभिन्न विश्वसनीय समाचार स्रोतों के लेख और विश्लेषण (जैसे बीबीसी हिंदी अलजजीरा, द न्यूयॉर्क टाइम्स, द गार्जियन।

****